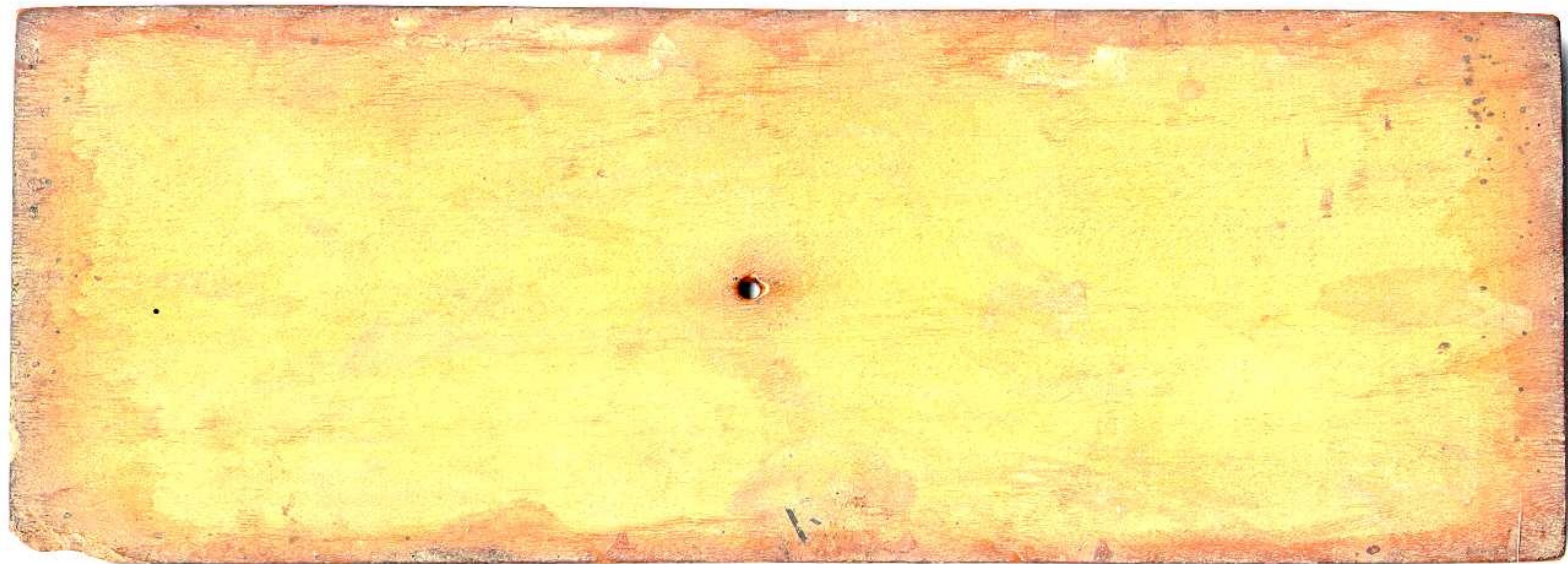




1665





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
साय नमो भगवते वासुदेवाय ॥
साय नमो भगवते वासुदेवाय ॥
साय नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ASHA ARCHIVES

1.665



१ॐ नमोऽष्टासिद्धिगणसाय नमः॥ ॥ गङ्गाधरं मुनि उवाच ॥
 अथागमं यवक्रामि गङ्गाधरं मुनिराधिनं । यासकं प्रसन्नं दत्त्वा
 अविनाशं सुखाशुभं ॥ ॥ मनसा कर्मणा वा वायुना देव
 नमस्तुते ॥ नमस्तुते ॥ राविर्गमलुलषूदत्त्वा राविर्गः
 ॥ अनविद्यागमाश्च न सर्वं प्रत्यक्षकानक ।

ये, कृष्णसर्व्यैः यः सिसि ॥ इदं रावः गविर्ल, पायं कृत्वा नः ॥ मयि ॥ गतः पाय
 क्रियायाग, नार्थसिद्धिस्तु वः ॥ मरिद रुत ॥ २ ॥ किं चि न सिध्यासः
 यानाम विषक लीधया ॥ ५ व माकरु क्रियादाव, भवता कार्यविन
 नायाव ॥ न काय उलूक गध लाडिनि, यंति आदिन वः ॥ वि कनन
 व्याधक, निव, कृष्णसर्व्यैः खनिव ॥ नृग उ विव निव निव, पायसा मय
 रुद, ध्याययाग, कार्य इव मसिधु मरिद ॥ ॥ ११३ ॥ यदं यदं वि

५१

२

कं चान्, विरिः तिष्ठ नृग लुतं ॥ लुन गवार्थ लारुच, विना स्वजनस मीम ॥ १ ग
 ॥ सर्वम विदुर्ल, या क सना ग सं गय ॥ वृगी गस्त ॥ गुरु ॥ काल ॥ कृ ॥ विना वन
 गगा ॥ कथयामि वग विदुः सद्यः युष्यय कान्तं ॥ विरावैय विनं समक
 यत्कृ को वल मस्ति ॥ २ ॥ किं चि स्वध्यास यानाम, विरिः तिध्यायो
 थयारु लद नृन ॥ थय स डव लारु स, थव सं गना यला य स, विन ना मुलिस
 ॥ थग सकल निविदुः कयू, विदु म दय कं लायू व सं गय म माल ॥ गुरु मं गल

वलशयु, कष्टममाल ॥ ध्याविर्नञ्जन, नृकाय, गतकानन ॥ गाममालक, द्याग
 स ध्यानचिद्रदयुव ॥ ॥ ११५ ॥ पदं पदं वेदुर्कव, यतिगातवकर्णिका
 । कलवृद्धि कनीक्या, कल्याणसि **हिंद** मयस्तिर्न ॥ रुमिलाराथलारुध, सम्व
 धे कनलानिव, प्रियस्यदर्शन ॥ केव, युगलारुधदृष्ट्यन ॥ मासुयन
 गलारु, सर्वथायरविषाणि ॥ गुनुरकिनगथा, कुलदवी केयूजय ॥ रुद के
 गद्य, लिङ्गानं, वामरुसगववर्ग ॥ दक्षि, लनयंद, लनमलुलं गितकादिक ॥

*** व ***

४ ॥ छि, छि, पि, ध्यासयानाम, कर्णिका ध्याकनदन, कुलवाधययाक, न
 गलशयुव ॥ रुमिलारुदयुव, दुयलारुदयुव, संवन्धेयुव, ध्याप्रियद
 खनिव, युगदयुव खनिव, लना नधिलारुदयुव, समरुशयुव, गुनुर
 कि, रुसनं, कुलयादगायूजा ॥ यावनाध्या, लिङ्गानं, दलयालाहान
 सकन ध्यायकनदयुव, कुवयादास मलुलयाद गित, आदिनदयुव ॥
 ॥ १२१ ॥ पदं द्विकं पदं चानं, यागक ४ वगिनरुव, आसीर्ल रुगयुवकु, सम्रा
हिंद

ॐ

नंयुर्वञ्चयि ॥ लूनस्य लारुखजने ॥ सङ्गमधिनिगल्लया ॥ ध्यागासम्यलिन
 र्थस्य वन्धूयुष्टिश्चयूक्ता ॥ गल्लसर्वमविद्युनरविद्युगिसखावद ॥ १०००
 गद्यलिङ्गान्खण्डकसिद्धौ नान ॥ १ ॥ किन्तुसिद्धिधयासय
 निगाध्याकनदनद्ववश्वः ॥ गुलिश्चयुगुलिमान्यगुलि ॥ लूनया
 लारुदयुधवसङ्गविकनाकनयायु ॥ इवसम्यलि वन्धूवृष्टयनिपुष्टश्चयु
 वकयतीमश्चयुव ॥ धसमल्लविद्युमदयकसिद्धसुखलायुक्तनध्याय

४

लिङ्गान्द्विनखनिव्किसिदाकांशदिन ॥ ॥ १२२ ॥ यदद्विकद्विक
 वेव्याङ्गकयनिगंनव ॥ विल्लस्यार्थय ॥ लारुलारुसम्मानमवव ॥ समागम
 गत्येष्टान् रविद्युगिनसंयः ॥ मासननाल्लिगयायकल्याणसम्यलि
 तं ॥ संसिद्धिः सर्वकार्याणां दृष्ट्य ॥ तगवसंयुगि ॥ अगार्थविद्ममगल्लवडा
 प्रोक्तलहाजनि ॥ ५ ॥ किन्तुसिन्तसिध्यासयनिगादलक्तनविल्लव्याः
 वसमान्यत्रादियनलारुदयुव ॥ वृष्टमिष्टसमागमश्चयुव ॥ संददममा

ल। लक्ष्मि नमस्तु या वी मलिङ्गनाम शयूव, मंगल शयूव, समस्त कार्यसिद्धि
 स्वनिवृत्तन, ध्याविद्, नागिसकलह शयूव, ॥ किं ॥ १२३ ॥ यदंदि
 ७ गिकं चैव, इन्द्रलिङ्ग गतव, कायानि नमस्तु वा नमस्तु सर्वसिद्धि नमस्तु
 यथा कृदुम्बवद्विस्तीलाहः सः मः स्वजनेः सह, रुविष्वागिनसन्दहा
 विनादिष्टस्य संगमः ॥ इन्द्रकेतुश्च रिङ्गनं कलहास्तिरुव कृदु, सुनिमिः
 लचिगविका, नागध्यायके मदिने ॥ ॥ किं नमस्तु, ध्यानाम इन्द्रलिङ्गः

यायाग दलकन, मवगाकार्यस समस्त सिद्धिशयू, सन्दह ममाल ॥ कृदुम्बवा
 धवपिव, सुसंगशयूव, धव, धनायतायूव, शयूव सन्दह मद्राकालः
 या रुद्रसंगशयूव, ध्यायन् रिङ्गन, कलहा शयूव, मिसज
 नया निमिगिन शवविका, दा द्रुद्रुनाग शयूव ॥ ॥ १२४ रिद
 ॥ एकं द्विकं वृक्षं व, रुद्राय यगिगलव, वधूनां सङ्गम, धेव, क्रियमवरुविष्वागी
 ॥ अस्मिन्नेकं रुद्रं साधूनां रुद्रं रुद्रावहं, सर्वकामारुविष्वाकि, गाशदवीयसा

दनः॥ ॐ दं च न द्यु लिङ्ग नं वा न्ध वे ॥ य नि मू च स न ग बु द म ज्ञा नी था ॥ स प्र द श्च
 सि या र्थि विं ॥ ८ ॥ कि न सि यि ध र ड ा क ना म या ण द ल क न व न्धु मि उ स म
 म रु य व न ना न रु य व ॥ रु य गु लि स कृ ति ना य व द सा वे रि ण न रु
 ग रु य व स म रु का र्थ सि द्वि द य व ध व णा ए द वी या पु सा द न ॥ ध
 या अ रि ङ्ग न वा न्ध व य नि स न वि रु स्या य व ध या गु लि स य स व प्र द न नि व ना
 जा आ दि नः ॥ ॥ १३१ ॥ य द पि कं य द वे व गु रा र्थ य नि ग रु व वृ द्वि ष्य
 रिं ड

ध न ला र गु द ष्य न ना ग र्म ण यः ॥ यू ग दा न य ग वृ द्वि द ष्य न ना ग र्म ण यः ॥
 रु न व ड वा ला र के रु द य स व नि र्वृ तिः ॥ य च्च न र्द वि न रु म्भा ग द यि ष्य सि
 ध र्व ॥ ॐ दं च न द्यु लिङ्ग नं स प्र डे रु सि य र्व ग न ॥ ९ ॥ कि स
 किं गु र क त्या ण वा या ना म या ग द ल क न वृ द्वि रु य व ध न ला र
 द य व र्म ण य म मा ल र नि व ॥ यू ग ला र रु ला र वृ द्वि रु य व र नि व र्म
 ण य म मा ल रु न ला र ड वा ला र द य व न ग ल स त्र न द रु य व णा गु

लिवसुद्रुगद्रुकवर्तुप्राफिश्रयुवनिष्ठय। धयाअरिहूनस्वयसयवर्गख
 निव॥ रि॥ १३२ ॥ उकंठिकंठिकंवायिइन्द्रि० यनितसुव। यत्वया
 विनिर्गकार्यगलेसर्वरुवि
 सर्वलगातना। माविषादयनात्
 स्वतसिइन्द्रि० यानामयागदवकून। कुविननायातकार्यकूनधसमसि
 सिद्धश्रयुव॥ स्वयसथवसुवपीययादावेकल्याणश्रयुव। कूनवनामम

मालकूनमनवाच्छसिद्धिश्रयुवः॥ ॥ १३३ ॥ उकंठिकंठिकंवेवः
 मनुन० गृण्णगलेत। अर्थनागवगद्वसीवाविष्वायिणीवज० ॥ गवासी
 द्वयेनकेशयिप्राफवान्प्राणसं
 यति॥ ११ ॥ किस्वस्वधया
 दा। वननागश्रयुव। गनीनवाधिश्रयुव॥ कूनवन्धनश्रयुव। प्राणसंलय
 श्रयुव। धगुलिप्रातुकार्यकदनशकालायुव॥ ॥ १३४ ॥ यद
 रि०

अ

पूर्वप्रिकं मध्यं चतुर्थं वा वसानकं । अक्षयं विजयानाम् गत्य वक्ष्यामि विनिर्गतं
॥ नाजानमन्ती लंवायि दणमुदित्य कर्केन । दणमन्त गता विना गवध गतिव
र्त्तन ॥ यनाउयध्वगुणां त्वारं निर्वाणमवच । यास्यासित्वं कुमात्सर्वं ८
मनसा यद्यदिच्छति ॥ नागध्वग वनासु व कुलयाय मग ४ यव १ देव
दवंप्रयद्यस्व गग ४ सिद्धिरु विष्णुनिः ॥ १२ ॥ किं स्वयि ध्यायाना नाम
विजय ध्यायान नृणां यदुद्धने ॥ नाजाया मन्त्रिणं दणया उयदुव । दणमन्

नया विना कुन विर्त्त सदग ॥ भवणं युया अजय युयु धवला ल कल्याण
रुयु । समस्त कार्याया किं रुयुव मनसलगा तुलि ०० क्का इल सिद्ध रुयुव । कु
न नागम रुव स्वकि नयाय समस्त रुयुव देवया सवाया दाव
धन सिद्धि रुयुवः ॥ ॥ १४१ सिद्ध ॥ यदमादो व रुव यदं वे वा वसानि
कं । अरियाग सुया ध्याना ववसायान सं गय ४ ॥ सर्वयि विनिर्मुक्तं ४ यास्या
समस्त लं धुर्वं । सकमदिव सतुर्य मिनि लुया ल विष्णुनि ॥ १३ ॥ किं पि किं

७

अहियागधवनयनकुन, वाहाशुयू, संगयममाल ॥ समस्तपीताशुयू, म
 गलेलायुनिय, धद्रसद्रन, धकार्यसिद्धयूवः ॥ १४२ ॥ यदेमा
 दोवतुक्कव, मधवानेगथादि कं, इन्द्रुहिः यनिगागेन, गवधान्यधन
 गुरु ॥ वान्यवानादिगार्थय, गव चतसिर्वर्तन, कद्रुम्वृद्धिः कल्याः
 लं, सङ्गमः खजनेः सरु ॥ एविष्यनिनसंदहा, नष्टकैलयासधुर्व, नाश्रुति
 यावतवृद्धिः सर्वसिद्धिर्नसंगयः ॥ शुद्धवगधरिहून, कलहालितवहु

ह। मूनिमिलचनविना, स्वनिमिलयिवरुगः ॥ १४ ॥ कि, पि, नसि, धईइ
 शिवायानामयागदन, कुन, धान्यादिन, धनत्रादिन, कुसदयिव ॥ वान्यवर्
 वृष्टयाकविलदयूव, कद्रुम्व वाधनयिव, कल्याणशुयूव, धन न
 संगशुयूव, धगशुयूव, सन्दह ममाल, रुकवस्तुनिनायूवनिग्यय ॥
 नाश्रुसम्यहिवृद्धिशुयूव, समस्तसिद्धिशुयू, संगयममाल, धयाश्रुतिरू
 न, कुसकलहवायूदयूव ॥ मूनिनिमित्तिनविननायाग, धवनिमिल

सिद्ध

नयात ॥

॥ १४३ ॥

यदयुर्वचतुर्कच, त्रिकं चैवावसानिकं सकृन्निः

मिरुमूल्यत्वं विनिगार्थसमागमः ॥ उयस्त्रिगचकल्याणं कन्यालारुणवर्तनं

७

अरिहूनमिदं यत्स्वप्नग्रामा

कनंगन ॥ १५ ॥

किं पि, स्व। लीया

१०

निमिरुनउत्पत्तिश्च, विरु

नायादा गुलिलायुव ॥ कल्याणग्राम

व, कन्यालारुणयुव। ध्यासमस्तुहानसं, स्वप्नस, पवदं गवैदा धकं स्वनिव

॥ ॥ १४४ ॥ यदयुर्वचतुर्कचो, वृषाययनिगस्तव, तन्म्यत्तिः सर्वकार्या

सिद्ध

गार्धनधान्यसमागमः ॥ यत्तयायिनिगंकार्यं गुरुसर्वरविष्यति। स्वप्नदुःकसि

दवर्कै, निगार्धयचिनसं गायः ॥ १५ ॥

किं पियि। धवृषधायानामयागदव

कन। समस्तकार्यसं, सम्यत्ति

नायुव, धनदयू, धान्यदयुव ॥ कन

विननायादा, कार्यलगा गुलि

सिद्ध, धसमस्तुं शयुव। स्वप्नखनिवद

वत्त्रादिन, नागिसं, सगयममालसिधनिग्यय ॥ ॥ १११ ॥

द्विकं यदय

दं चैव, यगका इह लिस्तव। महाकार्यमिदं विरु, धमार्थविनिगत्वया ॥ रवि

सिद्ध

व्यतिथियवै। (ग्र) प्रियवन्धू समागम ४। धन धान्यं पदपादि ४ सर्वं गुरु कृत्य लथाः
 ॥ इदं कै गुरु रिहानं यय व्यसि निव न नं। वर्च गा ना रु र्ग स्र व न यू या रु तानि
 व ॥ १ ॥ न सि कि कि इ इ रि धा याना म या न द न कु न त व ध च
 का य कि न वि रु ध म् दाम वि क नो या त कु न ॥ थ व वृ वृ मि उ व ॥ ११
 न्धू समा ग म रु यू व। धन धान्य ला रु प्रा फ रु यू व सम स्र ग रु रु यू व ॥ थ या
 सम स्र हान स्र ग रु लि नि व न न न ख नि व। त्र प्र स य व र त जा या ध क र्व नि

५

वृ रि द स्नान स सा आ दिन ॥ ॥ २१२ ॥ दि कं भ कं दि कं वा न क य नि ना ग
 व इ न्द्र रि ४। ग रु वृ द्वि ४ प्र जा ला रु वृ वृ स रु स मा ग म ४ ॥ कू ल वृ द्वि वि वा
 रु न दि न र्थ स र्व स त्व द ४। रु वि कृ ति ग वा ग र्थ वि र्द्ध ता ॥ १ त्व प्र द र्भ
 न ॥ प्र वा स ग म नं वि रु य का र्थ वि कि र्ग र्थ या ॥ कू ल द वी पु य द स न
 ग ४ सि द्वि ल वि ष्णु निः ॥ २ ॥ न सि कि न सि इ इ रि ना म या स द न कु न। कू स
 वा ध न पि व ऊ न ला रु द यू वृ वृ व स ग द यू व। कू ल वा ध न पि व लू त्र दि न

रि द

३

समस्तसम्यक्कितायुव॥ ध्याशयुगुतिविद्रुसा आदिनस्यप्रसखनिव॥
 मवयाककासयागवनगुतिविरुशयूकनकार्यविकना॥ धवकुलपादवी
 यायसादनथधनसिद्धिः यि व४॥ ति॥ २१३॥ द्विकंमकंउिक
 वरुइन्द्रिः यतिगागव॥ द्विय दविद्यनविना द्वादनिर्वाणकानल
 ॥ गत्यलालासिमासनवन्धुवर्गसमागम४॥ मातरंयिगनयेदृशागनविसृगस्तथा॥
 ४॥ नीनलगथावाग्यं मनसाविनिर्तयया॥ पूर्वजान्पूजयक्रियं पूजात्मनवृत्ति

१२

ल्लिगान्॥ प्रगनदिद्रुगार्थनसम्युर्लुकेरुविद्याति॥ इदर्वैगद्वुरिहूनं नाशोस्त्रीः
 ति४समागम४॥ ३ ॥ नसिक्किस्वइन्द्रिधायानामयासदलचून॥ नसिधाय
 गुतिअकसदुविकना नूठालस सूरवयाकावण॥ धयालारालकिन
 दयुववन्धुयनिसंगमशयुवमा मववुददाकिजाकाय॥ धयनिआदिन
 ४॥ विनसनिगागाशयुव॥ मननविकनायागुतिकार्यकूनसिद्धिः शयुव॥ इवस
 पूजायाहादेव ननानेपूजायाउ पूजात्मनसवाछव धगननिस्थययाचावका

मनाहाव समस्तसिद्धयुव ॥ धसमस्तनसं नागिससुसमागमश्च ॥

लिं

२१४ ॥ द्विकंयदंयुर्वुक्कययगितस्तव निमित्तं दृष्ट्यगंयुक्कयादृ

उ

गं तादृगंष्टु ॥ यच्चनष्टविन

द्वन्माहृतंयदयनंलव। तथाद्वनगत

स्यायि लाशायितवदृष्ट्यगं ॥ य

द्वस्वप्नेत्ययादृष्ट्यदवीदवकुलानिव

। नद्यायानासिवायश्च स्वजनेऽसहसंम ॥ ४ ॥ नसिंक्किपि युक्कयाया

नामयागदत्तकन निमित्तं गुलित्वन च न ग्वगुलित्वन सनं उं गुलित्वद ॥

१३

मगुलित्वकवस्तु मरुकवस्तु अवयाहस्त सचादंथश्च। असातायिनवाहव

स्तुथश्च लाहश्च गुलित्वन खनिव ॥ धनिकन सप्रसखं निवदवीदवत्रादि

न। रूसिसल्लिखदव थवजनय

निनायलाहाधकं खनिवस्वप्न ॥

॥ २२१ ॥ द्विकं द्विकंयदंवाह

यगीयंयगिताकुवि। र्दं हगायकं व

वद्विष्ट्यसनास्तिगसूखं ॥ त्वीविनयसिकल्या गं हृदयवार्थसंमं। विनिष्ट्यस्तन

विनास्यां गवविलं वलावल ॥ क्रीला निगवइ ४ खानिकल्या गं समूयस्तिगं। र्दं

मध

ॐ

गच्छति ह्यनं स्वप्नयस्य सिद्धवर्गं ॥ ५ ॥ नसि नसि चि यग्रीधायानामयाग
दलकन नुमिस ॥ ध गुलि स दगा दगा क छ इव सख मलाक ॥ ७ ॥ दलकनया वि
कनाकन विरु व के ल श ना क न वि क न प न क ल्या ग गुलि न ग ल स द
यलाय गुलि ॥ कन गुलि इ ४ व समस्त श्राव इ ग क ल्या ग गुलि इ ना
॥ ध या स म स ह न स स्वप्न स द व र व नि व अ न्य ग ॥ ॥ १२२ ॥ द्विक गुय के
य गि ग वि बा ध ४ ल उ ने ४ स द ॥ अ मि गे १ स द स न व ॥ मि गे १ स द वि य र्ग य ४ ॥ य
म रि द

१४

वगमनसमुच्चि हृदययविवर्तनं ॥ ६ ॥ गुन न र्कार्य माया स स गु नि दू ल ॥
५ ॥ नसि नसि नसि ध य गि या ग द ल क न थ व ॥ ध ध वि बा ध इ य नार्थ बा द
य नि ॥ ग इ व स म च इ य व मि ग व वा य व ॥ या व ना या य स मन स स उ च
इ य व ॥ ध गु लि ग्रा उ का र्थ मा या ना म या ग नि दू ल इ य व ॥
॥ ॥ १२३ ॥ द्विक द य गि क च न कू टा र्थ य गि ग स व ॥ वू दाना म गुरु काः
य वि ना ग य वि व र्त न ना य नार्थ वा व स न स ना लि स म्य र्क वा धू ना ॥ इ ४ य गे न
म रि द

प्रियालाशा, यवसायननधुना ॥ गलाजयकृर्कृत्य, मन्यमर्थविविक्तय, विंद
 वगक्ररिहून, स्वययगसिद्धिर्न ॥ १ ॥ नसि, नसि, स्व, धकूटधायानाम
 यागदलचून। धगुलिकार्यमि रिद, विनादतकून ॥ भवयातव्यव
 दानस, निग्यय, संपाहिमइ। थ वदतिमगदायनि, मखनिव, व्यव
 नसलाहमइयूवनिग्यय ॥ धगुलिकार्यगानगाव, भवगाविकनायाव। थमास
 मसहूनस, स्वयखनिव, मलिठदिन ॥ २२४॥ द्विकैदिकैचतुष्पाक, पुष्पाययनि
 रिद

ॐ

१५

गसुव। यनदानायदानार्थ, विनागददिवर्कग ॥ स्वगावविवातन, निर्वदाग्रविष्ण
 नि। यविनायगगगावी, प्रायग४कलरुसुथा ॥ अगिकानाचगविना, कल्याणसमूव
 लिगै। प्रागाकानिययायानि, ३४ स्वदानिसदेवग ॥ गुत्रुकिचगानित्यः
 कूलदवीधयूजय। विनिगैमन सासर्व, यनगसरुलैरवे० ॥ ८ ॥
 नसि, नसि, यि, थयगधाययागदलचून। भवयावसु, मुआदिन, कायगुलिवि
 कना, मनसदग। थथंशयूव, धगुलिवान, लायूव ॥ भवयासंगायगुलिराव

अ

विसृज्य निवृत्त कलहं विप्रायशुयुव। तव कार्यं विन नायागं न कल्याणशुयु
व॥ पापं न कशुयुव इह विवितां गुलिसदीह। गुन्याकर किं यांतां सदाह थ
व कलयादवीयुजायां॥ मन न विन नायाका समस्तं गुलिसलतां
गुलिसहलशुयुव॥ ॥ २३१ ॥ ॥ ॥ द्विकंठिकं यदं वानं यतितागव इन्द्रि
४। अयत्न धनसम्यक्तिः १। क्रियमवर विद्यानि॥ मासनासि गवायां थ कार्यमगम
रुहलं। वृंदवगं प्रल्लानं सुनिमित्तकथाकृता॥ डकसंशुक्लवृकांश्च स्वप्नस्य

१७

गृहानिव। नगनं जनयदं धून्यं शुक्लानिवसनां सिव॥ ८ ॥ नसि त्वं चिं यांतां
दल इन्द्रिधायानाम। कायधनसम्यक्ति तकावलाययुव॥ लक्ष्मिगाशुयुगव
धक कार्ययादलं। थ मासमस्तं हूनसं सुनिमित्तकनयाका कार्य॥ स्व
निवृत्तादसिमात्तपुस सुनयं वगुलिं। सुनयं व नगव सुनयं
आदिन लं वमड पूषु निन्नादिन थ थ नं सिदुख॥ ॥ २३२ ॥ द्विकंठिकं
द्विकं वानं कुठायं यतितागव। दानुं विनिर्गकर्म गवः थ याविलाकृता॥ का
मरिह

र्यसिद्धिश्च न नास्ति, सूर्यं चात्रानदृश्यं न। नवविद्रुमिदार्थं तु, स्वप्नमदिवदर्शनं॥

॥ १० ॥ नसि, स्व, नसि, कूट ध्यायानामयागदलकुन। कूटकापूरयकचमुलि

कर्मविकनायाग, कुन (अ) यमु लिमखद॥ कार्यसिद्धिश्च मइ, सख

मुलिमखद निव। कुन ध्यायि कूटयुव, स्वप्नसमसखनिव॥

॥ ११ ॥ द्विकं लिंकं ययैव, इन्द्र लिं यतिता नव। अविर्क्यं कार्यमकतु, किं वि

इत्यद्यं नव॥ यन कार्यमगतां विर्क्यं, कनायित्वनसं गयः। तथा गेदावृणीवित्ः

क

रिद

११

मनर्थविनिर्गत्वया॥ कूटकार्या कर्तुं किं विरु, पूर्वविनायविषयः। गगदवीप्रय

धंस, गग ४ (अ) यारु विषयि॥ अगु (अ) विद्रुमै गग, विधायकतर्हं गृह, गगाव

रिर्विनिर्गत्व, स्वप्नयग्यसिदव तां॥ ११ ॥ नसि, स्व, स्व, इन्द्र लिं ध्याया

नामयागदलकुन। कूटिकना मयाका मुलि, कूटाकार्य उपजयः

इनकुन॥ भवयाकडा का मुलिका र्यविकनायाडा कुन सं गयममाल। धगु

लिविकन्य मनर्थमु लिविकनयन॥ भवता कार्यविनायाव, कूयाया मुलि

स्व

चिन्तामाला माला धवला जया दवी या क सदा या डा थथन सम्यक्ति नायू व ॥
धुगुलि विद्रया क स क ल रु रु युव । धन न विद्रा डा या व स्व प्र स द व ख निव ॥
॥ २३४ ॥ द्विकं प्रिकं वरु कं व व दू ला प गि ना ग व । व दू न स्त्रि मि
गार्थ नां क्रियु म व र विष्मि ॥ दू दू म्भार्थ न विष्मि मि मू दू सि त्वं यू न ४ यू न ४
। मारि षी न स्त्रि ना या र्थ क्रियु मा काल विष्मि ॥ स्व प्र उ म्भ सि त्वं म्भार्थ म दि र्भ व य पः
॥ य सि । उ ले यु ग न मा ठा ग्ध स्व प्र त्ये यु गि व ध स ॥ उ ली । पूर्ण इ न का क र्ण म हा वृ डि

१८

रुवाधुना । आनाधय शुचिर्लुकि पुद्गल दवर्गा ॥ १२ ॥ न सि स्त्र यि व दू लाना
म पा ण द ल क न । अन क दाम या ल्या ख दू वा ला रु द यू न नान र्श यू व । कू दू म्भ याः
स्त्र न या वि न ना गु लि रु यू व वार् वार् ॥ कू ग्मा य मू माल पा प दू यि व ग ल क
न ल मा क रु यू व । स्व प्र स द र्ग नि या यू व कू न सा भ स आ दि न ख निव ।
अथा ता ले र्भ स या न या द ध र्क स्व प्र स कू न ख न ॥ या न या द व ता या न म हा व न
स त व ध क वा ध य या यू व ध गु लि स्व प्र स ख निव । शु चि रु मा व आ ना धे ना या

शिद

अथ वकुलमादवगा ॥

॥ १४ १ ॥ द्विकं चतुर्कं च वदं वृषायं यमगिरु

वयागिगहलविनेव कस्मायागमनगथा ॥ विनिगियाप्यासिकिर्युं स्तनव

द्विचेलयसि। इदं वगद्वलिकु

नं मेथुनाथेकं गाकथा ॥ १३ ॥ नसि

यिद्वि। वृषधायानामयागद

लकुन। विवाहाकर्मविननायाग

स्याकेउानमुलिविननायाग ॥ विननायागायुलि। यकशयूव ननान

नवृद्विशयूव। धयासमस्तुनसं मेथुनयायसस्तुनायकथा ॥

१२

ग

शिदमशिद

॥ १४ २ ॥ द्विकं पूर्ववदुर्कं च द्विकं वैवावसानिकं। विनययासिनागन विनिगाका

गमस्तुया ॥ यत्नं विनयसस्तुनं। एतन्नगर्त्तसं गाय ॥ रुविष्यगिचकार्यकं विनाग

४ किनुकस्यविग ॥ १४ ॥ नसि

यि नसि। गाकान आसान कुन विन

नायागायुयकार्ययुलि ॥ एत

उलि कुन विननायागास्तु। एतं क

ल्यालशयू सं गायममाल। शयूवकार्ययात्रकलस। एतद्विर्नं सूनानं विन

गायायसूव ॥

॥ १४ ३ ॥ द्विकं चतुस्त्रिकं च वैव यनिगाकुम। एतदि

शिद। शिद

घ

धिइखविनामभृगदागसम्मुखसूखं॥लघुगविनिगतार्थैर्विनिवृत्तिमूयड
वात॥अध्वनाममनादेवगवलाशाविदृष्ट्यग॥१५॥नसि,यि,स्व,लगागुलि
कुमलायायायादलकुन। व्याधिइखसमसूदूयूव,थगुलिस
खइखनिव,लायूवविनना माकागुलिदुवा,उयउवमशयक
।उकावदवयासवायाव,कुनलारुखनिव॥ ॥२४४॥द्विकयू
ववउको,दो,वृषाययनिगसुव,यश्चगदृङ्गगकिकि,इदृगसुवदृष्ट्यग॥
रिहइलोपूइ

२०

उयस्तिगसुकल्यालं,हृदिनिर्वाणकानलं,यावत्सिद्धिनिदानीनं,गतः॥अथास
विष्मति॥००दकेगकशिल्लनं,गुक्कानेनिलकयदि,गतः॥सर्वमिदं सत्यं,यन्मः
यागादिगतव॥१७॥नसि,यि, वि,वृषधायानामयागदलकुन,लगा
गुलिनूगलस,कुरुनसन,उद्व गश्वगुलिकुनखनिव॥कल्याणगु
लिउयस्तिगशयूव,हृदयसत्रानन्दश्वकानलगुलि,लगावनगासिद्धिश्व
उावनगासम्यकिनायूव॥धयासमसूकनसं,गुक्कथायसगिलदयूव,धसम

सं सत्यनद्रयाः गुणबुद्धिजनकनत ॥



सिद्ध

॥ ३११ ॥ शिकीपदं पदं येन दुन्दुभि

४यनिका नव। स्नानलारं स्त्रिगविकारतथा द्विगमनयुक्ति॥ अत्रिकानानिद्र ४खा ॥

百

निष्ठुरकसमुष्णिकावण्डिका

कूलदवीनु गांयूजयदिनिष्ठल४॥

गंगादेवीप्रसादनं नवसिद्धिरु

विकृतिर्विद्वत्कृतं कुरुते न स्वयं उक्तं

३१

सियर्वगन् ॥ १ ॥ स्व, वि, वि, इन्द्रि, अयानामयागदलकून। धनलाहगु=

लिविकना समूहयानउान्द्रिद्रिष्टियाशन॥ अगिकष ३४ सशवगुलिक

न. ३३ रुक्मिणी उवस्तिगहन । धनकुलयादवीवष्टिका चुननिष्ठलश्याव

पूजायाडा ॥ श्रीमादवीयाप्रसादनकूनसिद्धिशूयु + श्रुलिङ्गनङ्गनसख

सयवर्गस्यनिव ॥ ॥ ३१३ ॥ रिङ्गि कभकदिकंवेव् इन्द्रिः यमिगा

तव। मना नथ सुधा यूष्म अर्थला रुग्णदुग्धने ॥ कूटुम्बद्विना नाग्यर

विष्णुगिरिवकुमान्। प्राकृत्या विप्रसक्तार्थं देवता नाधनं कुरु ॥ यत्नमानसकर्म

तस्य सिद्धिरु विव्यानि + स्वप्न उदु कूस गम्य रुयान्मली ग्य कू उँ नान् ॥ २ ॥ स्वप्नि

३ ॥ स्वच्छि

नसि, इन्द्रलिखायानामयागदल, कुन। मनायथपुर्ण, इयूव, डवा लारखनि
व। कुदुमवाधनयीव, निनागिइयूव, कुनकर्मन॥ कुवयाव्याधिदकं, म
नशयूव, देवयात्रायाधनाया ३।। गगुलिकुन, आनरया, म्हाकर्मथ
सिद्धिइयूव। स्वयसखनिवसा, सन, मलाहाकिसिआदिनखं॥

२२

मलिह ३१३ ॥ प्रिकंयुर्वयदंम, प्रिकंयैवावसानिदं, अर्थविनाहिकविह, स्वरा
व, श्वेवमाइवे॥ येनकर्तुनमक्रामि, मिथेनपित्तसयस। लंसा, सुशसमर्थ

श्व, अर्थसन, अतिश्वं॥ यथाकृतापिदृष्ट, क, इ, सस्यानारविश्वगि। अत्रा
र्थगवचिद्रु, कनरायद, इ, इ॥ ३ ॥ स्व, छि, स्व, डवायाविननायाह
कुनविह, कुनसलावकामला, वेवियायसअसामर्थ, मित्रइनसन
मसवनयू। कुसाधुशिव, साम, थइव, थथनकुनडवानागइयूव
निग्यम॥ लिमानसथनइ, स्वइयूवखनिउ, थनकुनविद्रु, गगुलिकुन
कलइयूव॥ ३१४ ॥ प्रिकंयुर्वयदंम, वउर्कवावसानिकं, कल्याण

लिह

८

गुणसम्यक्ता, लकिर्वियति ताव ॥ निवृत्तिर्बसिद्धिर्बुध्वं विनसद्दुदि, त
ह सर्वकुभनेव, धर्मलाहविषयि ॥ मनसाऽपिनरतव्यं, क्वं वददिमाकु
। कल्याणगुणसम्यक्ता, महाका
वृद्धिसम्यसम्यदः। नणमनिव
यर्लविषयि ॥ अत्रार्थदरिहान्, सु
वम्भानि, स्वयसत्प्राव्ययव्यसि ॥ ४
॥ स्व, कि, पि, कल्याणमंगलगुणसम्यक्ता, किश्यव, लकि ध्यानामवागद
ल ॥ समस्तनिवृत्तिश्चाव, सकलसिद्धिश्च, निवृत्त्यदयस। धसमस्तक

२३

ममयास धर्मलाहश्यव ॥ मनसगायमगव, ददयस, कयायममाला, क
ल्याणगुणसम्यक्ता, तव बह्वर्थाश्यव ॥ ध्यात्रार्थनचूनहानस, सुवृत्तिश्च
युव, सत्यसम्यक्ता, दिद
युव ॥ मरि ॥ ३२१ ॥ प्रिकद्विक
युवृत्तिश्च, स्वयस, आदिनखन
पदंवेव, यतितावकर्तनी। अगव्य
व्यपदंवसि, सावधानतया ॥ स्वययव्यसिनात्रोव, वदुयाकावगानर्ण
। गन्धर्वनगनाकावा, दृष्ट्यर्कवगथाविधा ॥ अमहाविनागायकार्यकवनी

ज

नर्थक। मासमर्कमहाभाग, अन्यमर्थविविक्तम् ॥ महाइश्वरानिरुवता, तद्वि
र्षतिनृपग्रहागु, गतः स्मृता नन गच्छ, एाद्युयनहिजीवसि ॥ १ ॥ सत्
सिद्धि, कलनीधायानामपाग दलचुन। धगुलिक्रायजन, सावध
नशयावचुनदडा ॥ स्वपुसख निवनाप्रिस, अनगपाकान, गाननः
आदिन। गधवृयानगनया आकान, थथिठविधि नत्यनिव ॥ धगमहाविना
गशयमात, कार्यचुननिनर्थक। लदिनगवनागाशयूव, भवताकार्यविन

२४

नायाव। गवइश्वरशयूव, नाजायागुरुसयनलपिव ॥ भवयाथाप्रसडानमान
लाफ्रशचसन, गलानन मत्प्रशयदूव ॥ ३२९ ॥ त्रिकादिकद्वय
व, वडुलायतितातव। डयसम्मा ननागाना, तथाद्वगसमागमः ॥ अग
श्यननुनवन्दु, सङ्गमागामवडय ॥ तद्विद्यति तथा डयलारुकम्यनसं
वः ॥ विनातनाजसमान, सिद्धिसस्यायिसदुला। इदं वनद्वरिहान, मेधुनाथक
गाकथा ॥ ७ ॥ स्व, नसि, नसि, धवडुलाधायानामपाग दलचुन। डयमान

ॐ

नालश्याववाधुलिउद्धगहन॥धनलिभववन्धुमियतासिगश्याववा
नीवनिनागिश्याववृद्धिश्याव।असंखवधनलारेश्याव।कनचिकनोनेउ
मान्यगुलिधसिद्धिश्यावसरु लश्याव॥धसमसुहृन्ससुवमेध
नयावयाकाकथा॥ ॥ ३२३ ॥ ॥ प्रिकादिकं प्रिकं वेव प्रियदीयगिता
गव।सोराग्यकिकिदसुहृदु४खनकुकावन॥वेवनाग्यर्थलारुग्य प्रिये४सद
समागम४सर्व४खविभाकृष्टदृष्टगवमानद४॥नवेदमन्यथाविर्नावावाव

२५

हनिनासिका।वृद्धवगद्वरिहृन्नागेप्रियसमागम४॥ ॥ ॥ स्वनसिस्व प्रि
पदीधायानमयासदलकन।सोराग्यकुशुनसनवायुव४४खनगववसंमम
ल।४।कुनालश्यावधवप्रियर्ष नापलायव॥समसु४४खदुयुवमम
खनीव।भवगाविकनामगवद नथाद्राससस्त्रासवरुनयीव।धयास
मसुहृन्शुवगुलिकुननागेप्रियर्षसमागमश्याव॥ ॥ ३२४ ॥ प्रि
कंदयवकुर्वसरुलायगितागव।गुरुकृतेवृद्धिस्तुववहावलासम्यद४॥य

ॐ

त्वयामनसा ध्या नं नरु सर्वरु विष्णुति । किन्तु कायित वा द्वग, ग्निरु, णा कश्चलाय
 था ॥ रुदं केन द्रु लिहूनं सखलं रुदनीमिन ॥ नाओवकन दं कृत्वा, त्वमक ४ गपि
 तानिनि ॥ ८ ॥ स्व, नसि, यि । सरुलाधायानामयागदलकु । कुं वू
 वृद्धि रुयूव, व्या हातस सस्यक्ति दयूव ॥ ग्या गुलि केन मनन व्यावने
 पागुलि, धसमरु नायूव । कुं धनसासूया इनसन उ द्वग रुव गुलि विरु, णा
 क नायूव ॥ धया समरु हून सं विरु, णिनस, द्या रुस, द्या न दयूव । नागिसकन

२८

५

शिद

रुयायू, रुदकावनसया रुस ॥ ॥ ३३१ ॥ गिकं गिकं यदवेव, इन्द्रि ४ य
 गितागव । गिन विरु य सप्रार्थं रुदमं गुरु सस्यद ४ ॥ धन वृद्धि ४ प्रजा ला ला कस
 लारु ग्, णा रुन ४ । कुलदवो यय द स, गव सिद्धि रु विष्णुति ॥ अ वत्सा म्वा सव
 त्सा म्वा, सिगां यदा सिन गनी । अया र्थ विरु म ननु, य जी सिध्न व ड कृ सि
 ॥ ८ ॥ स्व, स्व, वि, इन्द्रि धायानामया सदल । कुन विरु नाया रु द व्या या रु थ
 व थ थ रुदम गुरु सस्यक्ति दयूव ॥ धन वृद्धि रुयूव, उन लारु दयूव, वसुला

० दलनिष्ठय । मनसानुपार्थनायादाकार्य प्राप्तीरुयवसदाह ॥ ७५ ॥ वनायाय
 मगव, कल्याणशुभ, सकलसुखी, उरुमयी निरुयव । कुन, कुमनन वधाव
 नयन, अगुलिसमस्त सिद्धि
 व ॥ ३३४ ॥ शिकोदोव वरुका २८
 व, मानिनीय नितागव । वावहा नग नायिका, मिश्रवन्धु समागम ॥ सु
 वृद्धः खविमाकृष्य, दृश्यते गवमानव । रुविष्यति न संदहः सकलं गव विनि
 ग ॥ १३ ॥ स्व, स्व, पि, मानिनीयायायागदल । वावहा नयादागुति विननास

मिश्रतावन्धुगनियनिनार्यनायव ॥ समस्त ३४ सुव, मान्यखनिव । रुविष्य
 निरुयव, सन्दहममात, समस्त विनना यादागुति कुन ॥ ३४१ ॥ शि
 कर्मकं वरुकां च, यदं वधावसा निरुकां गगः सोखयनायिका, रुदयग
 ववरुग ॥ रुविष्यति वग रुदं वि वादमाक विष्यसि । सोखयन उदकलारुष्य
 स्वजने ४ प्रीतिरुमा ॥ १३ ॥ स्व, पि, वि, ध, सुखयायन विनना, रुदयसकन
 कल्याणशुभ, वादयायमगव । सुखनयव धन लारु, धवजनप्रीति उरुम

महिद

शुभ्रव ॥

॥ ३४२ ॥ प्रिकं पूर्ववत्तु क्वं वदिकं वेवावसानिकं । कपटं वेन

समन्धं पुनित्विनास्ति न धूना ॥ सुविनंगव का लायं किं ग्यमानस्य यास्यति । ग

गस्यागमेन नास्ति यस्या रुडं रुवि

याति ॥ १४ ॥ स्वयि नसि कपटं वा

या गथं गद्वसमन्धं शुभ्रवदि

न पुनित्विना याग । गकालं कद्वशय २२

वधान । उडगुलि उडगुलि उडनमद् लिमालस कल्याण शुभ्रव ॥ ॥

३४३ ॥ प्रिक मादो वत्तु क्वं प्रिकं वेवावसानिकं । गल्यविजनेऽप्यकिंश्चि

हिद

कावद्वदिवर्तन ॥ स्तानवद्विष्यत निर्यं हृदयस्यापि निर्वृतिः । यच्च नष्टं विन

ष्टं वा गल्यसर्वं विष्यति ॥ १५ ॥ स्वयि स्वयं ययविजने उडोति शुभ्रव

हृदयसचिन्ता याग । स्तानवद्वि

द्विशुभ्रवसदाह हृदयसनिर्वृति

शुभ्रव । उडगुलिवसु रुडावशा

रुवसुं नायुव मरु कवसुं नायुव

समस्तं शुभ्रव ॥

॥ ३४४ ॥ प्रिकं पूर्ववत्तु क्वं दो गकटियति गागवा

समस्तं गल्यरुनकार्यं शुभ्रमिष्टसमागमः ॥ वावदान गता विना मिश्रवधूस

हिद

मागमः॥ सर्व इ १ खविमाकृष्ट, दृष्टमगवमानद । विन्द चैतद्गलिहूनं सवर्ण
 यद्विना ध्वं । आयासाद्यमगालाशा, दृष्टमसमूयस्ति ॥ १७ ॥ **सु. पि. पि. ग**
कटी धायानामपाणदलकुन, **समस्तकार्यलिङ्ग, निष्ठयनच्छ्रमि**
समागम युव । आहानगुलिसउ **द्विना, मिश्रवन्धुवनिनार्यनायव ॥**
समस्त इ १ खदूयुव, मान्यखनिवकुन ॥ धयासमस्तहानसी, भादसद्याननादिन
 दयुवनिष्ठय । आयासमूमात, धगुलिउद्यम, लोखनिव ॥ ॥ ४११

३०

वहुर्कक्षोपदोचान्, यगिगायत्रकान् । अर्थहानिवद्गुणविज, विरुमश्व
 नःवनः॥ आशाद्यसकर्मवर्ष, आगाह्य, आविनष्टति । अतिक्रान्तावगपाशा
 माविषादकनिष्ठासि ॥ अगष्ट्य **नवगुरुद्व, धनधान्यसमागमः॥ ३**
यस्मिन् चकल्याण, वन्धुरिष्ठ **समागमः॥ १ ॥ पि. वि. वि. ग**
गुलिकान जयागदनकुन । उवाहा निरुव, लविनसयागानकयुव, उथडे
 थरु, नूगलसकयंगलदनिव ॥ कुनरुयावथान्, दसदीदगा, इगुलिदय

कागु लिना नरुन। अतिगताकष्टनदः खरुन, थधरुसीन, धेनागमायम
 गव॥ धनलिचुनकलागुरुयुव, वंधुमिगसमागमरुयुव॥ ॥४१२॥ मलिद
 ॥ यतुर्कवयदमध्व, द्विकवेवा वसानिकी। मुनिमि कारवगविना, पूर ३१
 मध्वयिविनिग॥ सर्ववनगर्ग किर्ची, द्यावसनवध्वस। विवादग
 र्थलागाउ, गवाद्यादिनदृग्धन॥ नदिग्धनरुलं किर्की, इसू कर्त्तव्यकगसगि।
 किर्विला लंपगीकस, गगः सर्वरिविद्यगि॥ २॥ यि, चि, नसि, पूरषननि

षयनविननायाग॥ समस्तभवयाकडाठ गुलिचुकार्या, यावनायायवृद्धि
 रुन॥ वाडयायसुडयला रयायसचुन, अद्यापिमवधु। रुलकुं मखडरु
 स्वरावरुन। किर्विला लकुमाया वधधनसमस्तुरुयुव॥ ॥४१३॥ लिद
 ॥ यतुर्कवयदमध्व, शिकवेवाव सानिकी। विनिगार्थयुगकार्य, लकि
 र्त्तसमूयहिता॥ अर्थलाहयनाविना, गवयगसिवरुनः। विनिगश्चल्यदानी, मि
 गवध्वसमागम॥ विजयादृग्धनउत्थ, मरुनस्तनभवव। दृग्धनयुवलाहय

न

प्रवासकमभवत् ॥ किं वै विनोदकावनम् महावृद्धिर्विव्यति ॥ दं वनं कुरुते
 न स्वप्नयासासिदकिर्ण ॥ ३ ॥ पि, कि, स्व, विननायादा, असकगुलि, कुनस
 कगुलिरुयुव ॥ उवालागुलि विनना, कुनविननाशन ॥ धगुलिवि
 कनायादागुलि, छं वधूसं गमशयुव ॥ धिरुयशवगुलिरवनिव
 स्मिनगुलिसूतनायुव ॥ पूगलारखनिव, भवयाकवासयादावे, कुगल
 नकेउायदयुव ॥ कुषानसागाकानममालक, महावृद्धिशयुव ॥ धसमस

३२

कुनविनायादाहून, स्वप्नसदक्रीणउाचारनिव ॥ ॥ ४१४ ॥ वउष्
 दोपदमध्व, वउष्क ववसानिकं ॥ देवानुकूलन ॥ साधू, कूटायपतिगसुव ॥ द्विप
 दवरुगविना, तसामासनसक व ॥ अर्थगमसुथर्वधू, संयागमास
 मागन ॥ अनिययतथावाग्यमन सा विनिर्गलया ॥ नग ॥ सर्वमिदं किपुस
 कर्तृतरविव्यति ॥ ४ ॥ पि, कि, यि ॥ हसाधूदेवया अनुकूलनकुन, कूटधया
 नामयादादलकुन, नगुलियदसइगुलिविनना, धगुलिलकुननायुव ॥ उवा

रिद

गुफगुलिखं, छुंछुमिगुधश्चादिनलक्ष्मिनायनायूव ॥ गनीवसनिनागाशुभ
व, कुनममसविकायादागुलि, धसमसं गलकानल, सदुलशयुवकेन ॥

५ ॥ ४२१ ॥ चतुर्कदोदिकमध्व, पद, वैवावसानिकं, अर्थविकयसन्नं ३३
प्रगित्कनवदृष्टं ॥ प्रवासनं मनंतस्य, दिष्टेऽसदसमागमं, अर्थव
प्राप्त्यनं ध्यानं, स्नातिमिहकथाकृता ॥ प्रगनाया नमाननं, सर्वरुविषयि
माह, लं गनलं गच्छ, यनविद्वानजायते ॥ १ ॥ यि, नेति, छि, दामयावि

कनायागनिष्ठयन्, प्रगित्काशुवसनिव, भवयाकवासयागतामसं, छुव
धसमागमशयूव, उवापापीयायगुलि, धावनपनकुन, स्नायानिमित्ति
नयाकाकथा ॥ धनया अनुमा नन, समसं रिदुशयूव, धवमाम
छुंछुदवीयागवलययावध, कुनविद्वमशुंकिव ॥ ४२२ मध्व
॥ चतुर्कदोदिकोदोव, दृष्टायं प्रगित्कव, विनागवप्रकुलार्थे, दानिष्टव
लं गच्छ ॥ यनकार्यानियुक्तासि, मत्तं मगयसदृदि, अद्यरुगियकीवर्ष

क्रिष्णसनातिगत्सर्वं ॥ अन्यच्च कुरुतः कार्यं यच्च तत्सकलं लब्धं ॥ स्वयं यद्य
 सिद्धानं च तस्यार्थं नावदूष्यते ॥ ॥ गणायानवतानिर्णयं गुरुं किंचेनाय ॥ १४ ॥
 द कुरुदवीं वयं यस्तु तगः सिद्धिं लुविष्यति ॥ ५ ॥ पि, नसि, नसि, व
 वधायानामदलकुरुन। कुरुन पुत्रुवचिकनायादाडवा, दविडरु
 यावधानकुरुत ॥ भवया कार्यसयूकगुलिस, मृत्पुशयकुरुवदुदयसाध
 मुलिसुदगा, कुरुसयूव, सुखमदयूव ॥ भवता कार्यमावदुन, गगुलि

३४

सरुलरुना स्वयं सखनिव, ग्यादायूनदिसना मवुदनयू ॥ थव (ग) उयाआ
 वावसलयरुस, सदाद, गुरुया, रुकि रुयमाल। थकलयादवीयाके स
 वायायमाले, थथेनसिद्धिरु यव ॥ सि ॥ ४ २ ३ ॥ वतुक्कादोदि
 कंमधे, थिकं रेवावसानिकं। गनगविउयालारु ॥ १५ ॥ नासिकय
 सुथा ॥ धेनलाशः ॥ र्थसम्यकिः ॥ स्वतुनेयसमागमः ॥ यागकर्मवल्गनिर्वने
 सक्तकनलानिव ॥ ॥ गुरुसम्युति यद्यनि पावयति हर्तव्या। यद्यचिकय

लश्वसनिवृद्धदयसत्रानन्दगुलिकावलाशयुव॥

लिद ॥ ४३१ ॥ च

उक्तादौष्टिकं मध्यपदं वैवावसानिकं। एष आग्र्यः पुष्पानकु यागकं नामना
मनः॥ सुलानुवगता नानुवन्धु नाके समागमः। यत्वं विनयसकार्यं ३७
रिसर्वरुविष्यति॥ कीलानिगव इष्टानि कल्याणं समुपल्लिगं। दिग्धा
गयाधनं याया कुमलानुनयसि॥ यत्वं ता नानुलं स्वध्वं वनं यासादमवव।
उक्तसर्वं करिहूनं पुलं वादसु पादयाः॥ ८ ॥ यिस्वच्छि। थ आग्र्यः पुष्प

न धायानामपाणदलकून॥ समुद्रानुसडादगुलि मित्रवन्धु समागम
शयुव। कूनकु विननामाकाकार्य थ समस्तं सिद्धिशयुव॥ कूनसमस्तं इष्ट
इयुव कल्याणं शयुव। पुदस आनयागयायसधनयादि शयुव
कुमकुशलनथनीव॥ पुर्वत जायाधकं स्वपुसखनिव लिदकुं
दिनखनिव समस्त हूनसं दानदनयालासागम उगिसखनिव॥
॥ ४३२ ॥ च उक्तादौष्टिकं मध्यपदं वैवावसानिकं। कीलानिगव इष्टानि

य

कल्याणसम्पत्तिर्ग ॥ क्लानाकनगगाविना वदधा गत्समागमः यत्वे विनयस
कार्यं गत्सर्वरविष्यति ॥ यदर्थवत्तया ध्या गं युवासगमनं युति । गदर्थमपि स
वाप्य कुशलनागमिष्यसि ॥ १० ॥ **पितृत्वनसि कुन ३४ सप्तमस्तु ३१**
व कल्याणगुलिश्रुयुव पुदसः भवदवागडाठ गुलिचिन्ना अने
गपुकावननार्यसङ्गश्रुयुव । अगुलि कुन चिन्नाया हाकार्य धसमस्तु
सिद्धिश्रुयुव ॥ गगुलिदवाया कुन धावनपुं भवयाकवासयाय गुलि कुन

वित्तं धदवा निगुय पाकिश्रुयुव कुगवनलिहडापिब ॥ ॥ ५३३
॥ यतुर्कवगिको दोर मार्कनीयतिगातव । धनमासीत्पुक्तक मिश्रयुगायवा
न्यवा ॥ गत्सर्वरमदावला की लमतर्त्तसाद्येगं । रुयप्रवमनस्तुद्धि
कार्यं गगुयारविष्यति ॥ ११ ॥ **पितृत्वनसि मार्कनीधायानामवाग**
दलकुन । अनेगधन अदिकदयुव मिश्रयुग वृद्धवाधव अनेगदयुवाम
लिहगुलिकर्मदावला वाठ आवसमस्तुद्गो । पुनश्चानि अनेकांमनस्तु

रु

उष्टरयुव कार्यसिद्धियुव॥

॥ ४३४ ॥ विकामध्वचतु को दो सरु

लायगिगासुव। मनर्ण विनयसर्वर्तु तच्चतनासि साधुर्ग॥ यगायामनसा ध्यागा

ममूर्कभरविद्यति। गद्विद्यति

कालन, यच्चतमनसि स्थित॥ १२ ॥

यि, स्व, यि। सरुला ध्यायायास

दलकून। ग्वगुलिसि यगुनि विनना

३८

यागकून, धगुलिचुगा दमइ॥ ग्वगुलिचुनमनन व्यावनयामसिधयुव

ग्वलिचुनकावनसिधयुव ग्वगुलिचुमनसवानउदियुवरा॥

४४१ ॥ दोवतुको पदं वार्क, कूटायं यगि गरुव। वन्धूना गसु थाक्लु ४४१ याज

वमरुगा ददि॥ यस्य दकार्यमगस्य, नदुर्दुष्टरुपा जीर्ण। य के नाजी लिय

कैवा, कुं गसु नां गता सुखं॥ य

लं विनयसकार्य, निष्ठाति सु सनासि

ग। निष्ठां ववसाय ग्व, किं किं

दाला कर्तुं हलं॥ १३ ॥ यि, यि, किं

कूट ध्यायायागदनकून। वन्धूना गक सुष्टरयुव, हृदयगयाजदयुव॥ ग

गुलिधकार्ययारुल, ग्रहयायाज विननवेदइ। अथवा दानुगानरुय॥

अर्थवालपानधिकस्तुयुवसुखमइ॥ ग्यगुलिचुनविननायादाकार्य
 उत्पत्तिरुयमइ॥ निगुयनवावदानसु॥ विकुनवेठकुशुनसर्नरुतरव
 व निव॥ ॥४४२॥ दोवतु कोदिकंवाककुवययवतिगसुवकार्य ३२
 मानरसयदुयन्ननायिनसिद्धा नि॥ आत्मनानि कूलाजागः सर्वाधिष
 कृत्तुव॥ तस्मात्त्यनिगुसर्वमन्यमर्थविविक्तय॥ ॥४४॥ यिपिनसिद्ध
 षधायानामपाणदलचुन॥ कार्यआनमुयादाग्यगुलियत्रयादानमसि

धू॥ आत्मानविननायादानि कूलरुयुवसुखमसुखरावनचुन॥ अगयानि
 मिक्तिनसुखमसुखरावनचुन॥ अगयानि ॥४४३॥ वतु
 कोदिकंवाककुवययवतिग सुवकार्यमानंरसयदुयन्ननायिन
 सिद्धाति॥ आत्मानविननायादानि कूलरुयुवसुखमसुखरावनचुन॥ अगयानि
 कोदिकंवाककुवययवतिग सुवकार्यमानंरसयदुयन्ननायिन
 सिद्धाति॥ आत्मानविननायादानि कूलरुयुवसुखमसुखरावनचुन॥ अगयानि
 कोदिकंवाककुवययवतिग सुवकार्यमानंरसयदुयन्ननायिन
 सिद्धाति॥ आत्मानविननायादानि कूलरुयुवसुखमसुखरावनचुन॥ अगयानि

यात्रार्थननिवर्तककार्यरुनामवताञ्जविननायाव, धगर्नसिद्धिइयूव
॥ ४४४॥ प्रिवतुकोरसिद्धेव, वषलाय्यययय, यमितासधिव
कल। यत्वंदिनयसनिर्णकार्य भवयूनःयूनः॥ गत्वंप्रार्थयसनिर्ण
सिद्धिसमूयल्लिता, ध्यायिता गमनयूय, लालःस्त्रनगर्थविव॥ न ३०
वत्प्रार्थससर्वस, क्रियलालारविष्यति। एकेनेवर्क्यासन, गर्थवदिवसनउ॥
यनत्वासीर्गद्व-धा, गर्गनामामहासूनिः। गनस्ययविनिर्णय, मृद्यायाककनली॥

॥ १७॥ विवि, वि। वषलायानामयागदनकुन, विवकनकुन, व्यकुलि
कुनविननायाकागुलि, कीथ, धकार्यरुनां२६। कुनप्रार्थनायाका, क्रि२६
याकुन, सिद्धिइयूव। गनउा नसनयूयलाल, स्त्रनलालदयूव॥
रुकाववाकगुविडयासमस्त ननानलालद। धकुमन्नासायाकागु
नि, यत्वंदिनसिद्धेइयूव॥ ग्वद्वदतसमस्त, यननमस्तानयाकावगयाय
गर्गनामध्या, गवधक, महासमिदत। धद्वनयम, यथम, लि, का

वविवाचन, निर्णय, यावत्, यावत्, कवली, ध्याना, म, म, सुदय, कल ॥

वृत्ति, ग, ग, म, निविन, विता, यावत्, कवली, समा, फः ॥ अराम, म, लं ॥

मं सम्बन्ध १८२ वे, म, व, म, क, य, के, म्या, या, गि, थि, क, क, स, व, र्क, ॥ अर ॥ ११
विवाचन, या, ला, अ, न, लि, वि, तं ॥

ASHA ARCHIVES



ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1-665

